घराने का मर्म : एक दृष्टि
गुन्देचा बन्धु

घराना की व्याख्या करते समय हमें घराना शब्द के मर्म को समझना होगा । घराना की शाब्दिक व्याख्या से हम शायद घराना के मूल भाव को नहीं समझ पायेंगे । यह ध्यान देने योग्य बात है कि संगीत में घराने का सृजन किसी एक व्यक्ति के विचार और उसकी व्यक्तिगत सृजनात्मक उर्जा से होता है । लेकिन फिर भी घराने का यह सृजन पूरी तरह किन्हीं अन्य सांगितिक अवधारणाओं पर टिका होता है । वह अपने आप में एकदम किन्हीं नये संगीत सिद्धान्तों या शास्त्र पर आधारित नहीं होता । देखा जाये तो वह कई विचारों और सांगितिक परम्पराओं का प्रवाह है । और जब हम इसे प्रवाह कहते हैं तो कभी भी हमें इसे एक परमसत्ता या अटल रूप में नहीं देखना चाहिये । इसे सृजनात्मक यात्रा का एक पढ़ाव ही मानना चाहिये । लेकिन आमतौर से घराना संगीत को हम एक अचल और स्थिर दृष्टिकोण मानकर उसकी व्याख्या करने लगते हैं । जबकि देखा जाये तो घराने की उत्पत्ति ही प्रवाह से हुई है । किसी एक व्यक्ति के सृजनात्मक विचार का ही वह परिणाम है । अतएव प्रवाहमान संगीत को एक अचल रूप में देखना घराना के मूल विचार के साथ अन्याय होगा ।

सांगितिक घरानों की विवेचना करने से यह ज्ञात होगा कि किसी विशेष घराने का संगीत उसके सृजनकर्ता की विलक्षण प्रतिभा, उसकी रूचियों , उसके स्वभाव और उसकी सीमाओं का परिणाम है। वह घराना उसी प्रकार के संगीत को जन्म देता है । घराना संगीत की व्याख्या करें तो हमें किसी घराने में आवाज का लगाव , गायन की लय, रागों का चयन , राग रूप का विशेष ध्यान, स्वर एवं लय आघात और उनका गुंथाव आदि बिन्दुओं से उस घराने की विशेषताओं का पता चलता है और ये सभी तत्व मिलकर उस घराने का एक रूप गढ़ते हैं जिससे गायन की एक नयी शैली जन्म लेती है । इस शैली में आवाज के लगाव का सबसे महत्वपूर्ण स्थान होता है । अब यहॉ यह जानना आवश्यक है कि उस आवाज में क्या विचार या सिद्धान्त निहित है । क्योंकि जो सबसे महत्वपूर्ण बिन्दू – आवाज है वह सृजनकर्ता की अपनी है और प्राकृतिक रूप से यहॉ तक कि दो व्यक्तियों की आवाज भी समान नहीं होती है । घराने के ट्रांसमिशन में यही सबसे बड़ी समस्या है । घरानेदार संगीत जो कि मूलतः सृजनात्मक प्रवाह पर टिका हुआ है, यदि उसे आवाज की नकल करते हुए, जो कि एक अप्राकृतिक किया है, जस का तस प्रस्तुत कर दिया जाये तो इसी बिन्दु से उस घराने का क्षरण या विकृत रूप शुरू होता है । अतः यहॉ संगीत को जस का तस प्रस्तुत करना घराने की रक्षा नहीं बल्कि उसका विघटन है और जो संगीत घराने की मूल भावना , सिद्धान्त और रूप से प्रभावित होकर गायक या वादक के व्यक्तिगत सृजनात्मक कौशल, उसकी अपनी अप्रतिम आवाज से होकर गुजरता है वही संगीत वास्तविक रूप से घराना संगीत का प्रतिनिधित्व करता है । जो कुछ सृजनात्मक परिवर्तन घटित होता है वह घराने का और राग संगीत का स्वभाव है और उसे उसी तरह देखा जाना चाहिये। बहुतायत प्रचलित दृष्टिकोण के अनुसार जिसे हम घराने का रक्षण समझ रहे हैं वह

वास्तव में एक तरह का क्षरण है और जिसे हम घराने का विघटन समझ रहे हैं वही घराने का मर्म है ।

अब हम उपर्युक्त सैद्धान्तिक व्याख्या को क्रियात्मक रूप में देखें । उस्ताद अमीर खॉं साहब का ख़याल गायन एक महत्वपूर्ण परम्परा के रूप में देखा जाता है । उस्ताद अमीरखॉं का गायन अपने आप में कई पूर्ववर्ती परम्पराओं से संयोजित था । उनका गायन हम किराना घराना के एक आदर्श रूप में देखते हैं । उसी घराने में उस्ताद अब्दुल करीम खॉं का गायन एक अलग रूप लिये था । किराना घराने की सार्थकता इसी से सिद्ध होती है कि उसे इन उस्तादों में पर्याप्त अवकाश मिला और उनके सृजन से इसे संवरने का मौका मिला । यही घराने का सही प्रवाह है । 60 के दशक में अधिकांश गायकों पर उस्ताद अमीर खॉं की गायकी का प्रभाव दिखाई देता है । सभी लोगों ने उन्हें अपने अपने तरीके से आत्मसात किया । यही घराना और परम्परा की सार्थकता है । यहॉं घराना या परम्परा को एक नाम के रूप में नहीं बल्कि एक विचार के रूप में देखना चाहिये ।

श्रीमती किशोरी अमोणकर अपने पूर्ववर्ती जयपुर घराने के संगीत को हूबहू उसी रूप में प्रस्तुत नहीं करती बल्कि उसे अपनी प्रकृति का स्पर्श देती है और यही जयपुर घराने के स्वरूप की प्रामाणिकता है । श्रीमती किशोरी अमोणकर के गायन को जयपुर घराने से विचलन के रूप में नहीं बल्कि जयपुर घराने के सही प्रवाह के रूप में समझना चाहिये । उनके गायन को जयपुर घराने से मुक्त होकर नहीं देखा जा सकता । उनकी सृजनात्मकता की बुनियाद जयपुर घराने पर ही खड़ी है इसलिये जो गायन किशोरीजी प्रस्तुत करती हैं वह जयपुर घराना ही है।

पण्डित मल्लिकार्जुन मंसूर जयपुर घराने के संगीत को अपनी वरीष्ठ सुश्री केसर बाई केरकर से भिन्न रूप में प्रस्तुत करते हैं । उसे अपनी मौलिक आवाज और स्वभाव का स्पर्श देते हैं । अपने पूर्ववर्ती संगीत को ठीक वैसे ही नकल की तरह यदि प्रस्तुत किया जाये तो वह जयपुर घराने का क्षरण ही है। पण्डित कुमार गन्धर्व के संगीत को भी इसी नज़र से देखने की ज़रूरत है । उनका संगीत पूर्ववर्ती घरानों से मुक्त नहीं बल्कि ग्वालियर घराने में गोते लगाकर तैरता हुआ संगीत है ।

ज़रूरत हमें, घराने के धर्म को नहीं बल्कि घराने के मर्म को, समझने की है ।